COMPASSIONATE CITIZEN

# दयालु नागरिक हर रोज पशुओं के लिए कुछ खास करें

**अध्यापक कई आसान तरीकों से पशुओं की सहायता करने में बच्चों की मदद कर सकते हैं. कुछ सुझाव नीचे दिए हैं:**

१. अपने आधिकारिक पाठ्यक्रम के भाग के रूप में दयालु नागरिक को शामिल करने के लिए अपने स्कूल को प्रोत्साहित करें.

२. स्कूल के अधिकारियों से कहें कि वे चिड़ियाघरों और सर्कसों में बच्चों को न ले जाने की नीति बनाएं. पशुओं को जब पिंजरे में बंद रखा जाता है या बांध कर रखा जाता है तो उन्हें तकलीफ होती है, और सर्कसों में इन्हें पीटा जाता है ताकि वे आज्ञा का पालन कर वह सब करें जो उनके लिए स्वाभाविक नहीं होता. चिड़ियाघरों और सर्कसों में पशु अकेला और निराश और दु:खी महसूस करते हैं. इसकी बजाय स्थानीय पशु आश्रय या वन्य जीव अभ्यारण्य में जाएं.

३. स्कूल के अधिकारियों से कहें कि वे ड्रेस कोड में परिवर्तन करें और चमड़े की बजाय कपड़े के जूते शामिल करें ताकि क्रूरता से मुक्त हुआ जाए. चमड़े का उत्पादन करना न मात्र क्रूरता पूर्ण है, बल्कि इससे पर्यावरण को भी नुकसान होता है. पशु की त्वचा को चमड़े में तबदील करने के लिए भारी मात्रा में विषाक्त रसायनों की आवश्यकता होती है, और चमड़ा बनाने वाले कारखानों से निकला हुआ विष नदियों और जलधाराओं में मिलता चला जाता है.

४. अपने स्कूल वालों से कहें कि वे मात्र वनस्पतियों से बना स्वादिष्ट अल्पाहार और दोपहर का भोजन देकर स्वास्थ्यकारी–भोजन कार्यक्रम को आरंभ करें. विचारों, सुझावों और खाना बनाने के तरीकों के लिए हमसे Info@compassionatecitizen.org पर संपर्क करें.

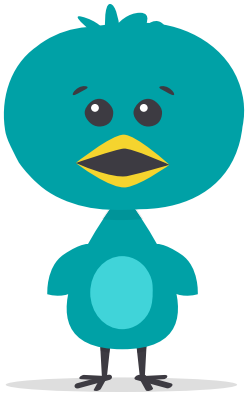

५. प्रिंसीपल से कहें कि बच्चों को बताया जाए कि वे ''दयालु पतंगें'' ही उड़ाएं जिन्हें सूती धागे से उड़ाया जाए. नोकदार, कांच–लिपटे या धातु वाले मांजे का प्रयोग न किया जाए. इस जानलेवा मांजे की वजह से हर साल अनगिनत पक्षी और कुछ मनुष्यों की जान चली जाती है.

६. अधिकारियों से कहें कि वे ऐसी नीति लागू करें कि स्कूल में पशुओं को न रखा जाए. ''पालतू'' के तौर पर जानवरों को स्कूलों में रखने पर अक्सर उन पर ध्यान नहीं दिया जाता और उनके साथ दुर्व्यवहार होता है, क्योंकि बच्चे ही तो होते हैं, वे जिम्मेदारियों को समझ नहीं पाते, या टीचर्स व्यस्त रहते हैं. जानवरों को खरीदने से पालतू जानवरों के धंधे वालों के हौसले बढ़ते हैं जिससे गैर–जिम्मेदारियों और जानवरों की खरीद को बढ़ावा मिलता है.

७. बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे पशु अधिकार क्लब खोलें और पशुओं के प्रति दया बरतने के बारे में उनसे चर्चा करें, जैसे कि न तो पशुओं को खाएं न ही इनके चमड़े से बने वस्त्र आदि का प्रयोग करें.

८. अन्तरराष्ट्रीय पशु अधिकार दिवस (१० दिसंबर), पृथ्वी दिवस (२२ अप्रैल) और विश्व पर्यावरण दिवस (५ जून) सहित, विशेष दिनों के अवसर पर पशु-संबंधी मुद्दों पर बातचीत करें.

९. आवारा पशुओं के प्रति बच्चों को दयालुता बरतने, कुत्तों और चिड़ियों के लिए पानी के कटोरे रखने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें.

१०. जागरूकता लाने के लिए पशु अधिकारों के बारे में बोर्ड बनाकर लगाएं.

११. विद्यालय के उत्सवों, अभिभावक-अध्यापक बैठकों और अन्य कार्यक्रमों के दौरान एक सूचना पटल बनाएं जिससे कि और लोगों को साहित्य बांटा जा सके और उनसे पशुओं के अधिकारों के बारे में बातचीत की जा सके. आपूर्ति के लिए आप हमसे Info@compassionatecitizen.org पर संपर्क करें.

१२. पशु-संरक्षण मुद्दों के बारे में पोस्टर प्रतियोगिताएं करने, वाद-विवाद तथा निबंध प्रतियोगिताओं में बच्चों को शामिल करें.

१३. बच्चों को प्लास्टिक छोड़ने हेतु प्रोत्साहित करें! क्या आप जानते हैं कि प्लास्टिक की थैलियां ज़मीन में गाड़ दिए जाने के बाद हज़ारों वर्ष तक नष्ट नहीं होतीं? प्लास्टिक के कबाड़ से आवारा गायों और भैंसों को नुकसान पहुंचता है क्योंकि वे अनजाने में इन्हें खा लेती हैं और इससे हर वर्ष समुद्र में अनगिनत जीव मर जाते हैं.

१४. किसी गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) की सहायता से अपने एरिया के आवारा कुत्तों और बिल्लियों को बांझ करवा दें ताकि उनकी संख्या बहुत अधिक न बढ़ने पाए. आप यह सुनिश्चित करें कि एनजीओ उन पशुओं को वहीं छोड़कर आए जहां से उन्हें लाया गया था.

१५. पेड़ लगाएं और पर्यावरण को हरा-भरा बनाने की दिशा में अपना योगदान दें.

आइये जानें कि आपके स्कूल में क्या हो रहा है, और हो सकता है कि यह पीटा की ओर से दयालु विद्यालय पुरस्कार पाने का पात्र हो. जो स्कूल ऊपर बताए गए पहले छह कदम उठाता है वह अपने आप ही इसका पात्र हो जाता है. आप Info@compassionatecitizen.org पर प्रश्न भी भेज सकते हैं और अपनी टिप्पणियां कर सकते हैं.

COMPASSIONATE CITIZEN